JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सरकारी कर्मचारियों में कर नियोजन के विषय में जागरूकता का अध्ययन करना (रूद्रपुर शहर के सन्दर्भ में)

शोधार्थी–अशोक कुमार
वाणिज्य विभाग–सरदार भगत सिंह राजकीय स्नाकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर
ई. मेल. आई. डी.–ashokkumarrudrapur@gmail.com

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यक्ति का मुख्य उद्दे"य अपने कर–दायित्व एवं कर भार को न्यूनतम करना होता है ताकि करारोपण के बाद बचने वाली उसकी आय अधिकतम हो सके। किन्तु ऐसा करते समय वह कोई अनैतिक या अवैधानिक कार्य भी नहीं करना चाहता। ऐसा वह कर–नियोजन अपनाकर ही कर सकता कर सकता है। वह अपनी समस्त आयों, व्ययों एवं विनियोगों की ऐसी व्यवस्था करना चाहता है जिससे कि उसका कर–दायित्व न्यूनतम हो तथा कर के बाद की उसकी आय अधिकतम हो। ऐसा करने के लिए उसे कर कानूनों का गहन अध्ययन करके उनमें उपलब्ध छूटों, राहतों एवं प्रेरणाओं की जानकारी रखनी होगी तभी वह कर नियोजन कर सकता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति कर नियोजन करके अपनी आय अधिक करता है तो उसके साथ–साथ अर्थव्यवस्था का भी स्वस्थ विकास होता है। किसी भी दे"ा का स्वस्थ आर्थिक विकास तभी सम्भव है जबकि उसके निवासी अपनी अर्जित आय की बचत को दे"ा के विकास में लगायें और निवासियों की बचत दे"ा के आर्थिक विकास में तभी लग सकती है, जबकि उन्होंने वैधानिक रूप से ही आय–कर चुकाकर बचत की हो। और ऐसा वह कर नियोजन अपनाकर ही कर सकता है। अतः इस शोध पत्र में लोगों में कर नियोजन के विषय में जागरूकता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में सर्वप्रथम कर–नियोजन एवं कर प्रबन्ध का अर्थ, कर प्रबन्ध के उद्दे"य, कर नियोजन के स्वरूप, शोध उद्दे"य, वैकल्पिक परिकल्पना को द"ार्ाया गया है तत्प"चात समंक वि"लेषण, शोध परिणाम एवं निष्कर्ष तथा सुझावों को प्रदर्"ात किया गया है।

कर नियोजन

कर नियोजन किसी व्यक्ति की आयों, व्ययों एवं विनियोगों की एसी विधि सम्मत व्यवस्था है जिससे उसका कर–दायित्व न्यूनतम हो तथा कर के बाद की उसकी आय अधिकतम हो। प्रोफेसर डाल्टन के अनुसार,'' ***कर–नियोजन सरकार की नीतियों के अनुरूप ईमानदारी से कार्य करते हुए कर छूटों एवं कर प्रेरणाओं का लाभ उठाते हुए कर–दायित्व को न्यूनतम करने का वैज्ञानिक तरीका है।''***

कर–प्रबन्ध

कर–प्रबन्ध एवं कर–नियोजन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। बिना कर–प्रबन्ध के कर नियोजन सम्भव नहीं है। कर नियोजन द्वारा एक करदाता अपने कर–दायित्व को न्यूतम करने का नियोजन करता है, जबकि कर–प्रबन्ध ऐसे कर–नियोजन को सफल बनाने का माध्यम है, अर्थात कर–प्रबन्ध द्वारा ही कर–नियोजन को सफल बनाया जाता है। अतः कर–नियोजन यदि साध्य है तो कर–प्रबन्ध एक साधन। कु"ाल कर–प्रबन्घ द्वारा ही कर–नियोजन को सफल बनाया जा सकता है। अतः कर–दायित्व को न्यूनतम करने के कर–नियोजन को सफल बनाने वाले तन्त्र को कर–प्रबन्ध कहा जाता है।

कर–नियोजन के उद्देश्य

- कर–दायित्व में कमी लाना,
- मुकदमेंबाजी में न्यूनता लाना,
- उत्पादक विनियोग करना,
- अर्थव्यवस्था का स्वस्थ विकास करना,
- आर्थिक स्थिरता लाना।

कर–नियोजन के स्वरूप

- बचत करके नियोजन करना,
- निवास स्थान के आधार पर कर–नियोजन करना,
- कुछ निर्दिष्ट विनियोग करके कर–नियोजन करना,
- आय के प्रत्येक मद के सम्बन्ध में नियोजन करना,
- आय प्राप्तियों की तिथियों में परिवर्तन करके कर–नियोजन करना,
- वि"ोष क्षेत्रों या अवधि में उद्योग स्थापित करके कर–नियोजन करना।

अध्ययन के उद्देश्य

सरकारी कर्मचारियों में कर–नियोजन के विषय में जागरूकता का अध्ययन करना शोध अध्ययन का उद्दे"य है।

शोध प्रविधि

यह अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो समंको पर आधारित है। अध्ययन में एक व्यक्ति करदाता के रूप में 50 सरकारी कर्मचारियों का चयन सरल दैव निद"ान विधि से न्याद"ा के रूप में किया गया है। ये सभी न्याद"ा उत्तराखण्ड राज्य के ऊधम सिंह नगर जनपद के रूद्रपुर शहर से लिए गए हैं। सरकारी कर्मचारियों में क्लर्क, अध्यापक तथा प्रोफेसर को शामिल किया गया है। प्राथमिक समंको को साक्षात्कार अनुसूची से एकत्र किया गया है तथा द्वितीयक समंको को आयकर की पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं तथा विभिन्न वेबसाइट से एकत्र किया गया है। वैकल्पिक परिकल्पनओं

को निर्मित किया गया है। सांख्यिकीय उपकरण के रूप में प्रति"ात विधि तथा काई–वर्ग परीक्षण को शामिल किया गया है।

शोध परिकल्पना

यह वैकल्पिक परिकल्पना की गयी है सरकारी कर्मचारी एवं कर–नियोजन की जागरूकता के सम्बन्ध मे सार्थक सम्बन्ध है।

संख्यिकीय उपकरण

समंको के वि"लेषण हेतु काई–वर्ग परीक्षण तथा प्रति"ात विधि का प्रयोग किया गया है। काई–वर्ग के गणित मूल्य की तुलना तालिका मूल्य से की गयी है। यदि गणित मूल्य तालिका मूल्य से कम होता है तो निर्मित की गयी वैकल्पिक परिकल्पना असत्य सि़द्ध होती है तथा इसके विपरीत यदि गणित मूल्य तालिका मूल्य से अधिक होता है तो निर्मित की गयी वैकल्पिक परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

समंक विश्लेषण

तालिका संख्या–1
प्रयोज्यों का लिंग अनुसार वर्गीकरण

क्र.सं.	लिंग	संख्या	प्रतिशत
1.	पुरूष	40	80%
2.	स्त्री	10	20%
योग		50	100%

स्त्रोत–प्राथमिक समंक

तालिका से स्पष्ट है कि न्याद"ा के रूप में लिए गए 50 सदस्यों में से 40 सदस्य पुरूष हैं तथा 10 स्त्री हैं जिनका प्रति"ात क्रम"ाः 80% तथा 20% है।

तालिका–2
प्रयोज्यों का जीविका के अनुसार वर्गीकरण

क्र. सं.	पेशा	संख्या	प्रतिशत
1.	क्लर्क	10	20%
2.	अध्यापक	16	32%
3.	प्रोफेसर	24	48%
योग		50	100%

स्त्रोत–प्राथमिक समंक

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है कि न्याद"ा के रूप में लिये गये 50 सदस्यों में से 10 क्लर्क, 16 अध्यापक तथा 24 प्रोफेसर हैं जिनका प्रति"ात क्रम"ाः 20%, 32% तथा 48% है।

तालिका संख्या–3

लिंग के आधार पर कर नियोजन के विशय में जागरूकता का विवरण

लिंग श्रेणी	क्या आपको कर नियोजन के विशय में जानकारी है?		योग
	हाँ	नहीं	
पुरूष	29	11	40
स्त्री	2	8	10
योग	31	19	50

स्त्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण

काई–वर्ग (x^2)का गणना मूल्य= 8.41, स्वातंत्रय संख्या (d.f.)= 1, काई–वर्ग (x^2) सारणी मूल्य=3.841

तालिका संख्या 3 द"र्ाती है कि 40 पुरूष प्रयोज्यों में से 29 प्रयोज्यों ने कर नियोजन के विषय में जानकारी के विषय में हाँ कहा है तथा 11 प्रयोज्यों ने न कहा है तथा इसी प्रकार 10 स्त्री प्रयोज्यों में से 2 प्रयोज्यों ने कहा है कि उन्हें कर नियोजन के विषय में जानकारी है तथा 8 प्रयोज्यों ने विषय में न कहा है।

काई–वर्ग का गणना मूल्य 8.41 इसके 5% सार्थकता स्तर पर 1 स्वातंत्रय अं"ा के सारणी मूल्य 3.841 से अधिक है। अतः वैकल्पिक परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है अर्थात लिंग श्रेणी तथा कर नियोजन के विषय में सम्बंध सार्थक है अर्थात प्रयोज्यों को कर नियोजन के विषय में जानकारी है।

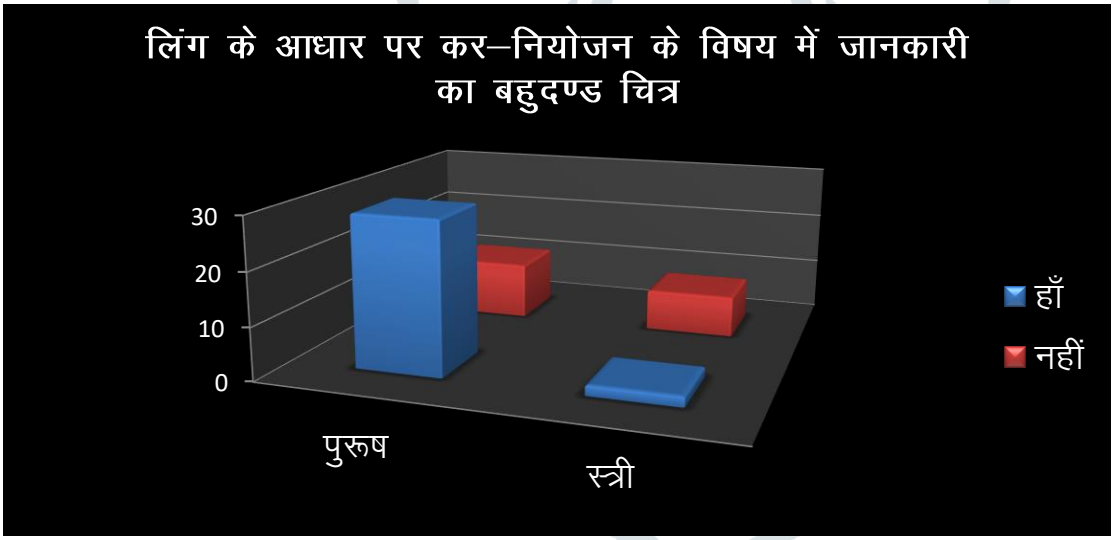

तालिका संख्या–4

व्यसाय (पेशे) के आधार पर कर नियोजन के विषय में जानकारी का विवरण

व्यवसाय (पेशा)	क्या आपको कर नियोजन के विषय में जानकारी है?		योग
	हाँ	नहीं	
क्लर्क	3	7	10
अध्यापक	8	8	16
प्रोफेसर	20	4	24
योग	31	19	50

स्त्रोत–प्राथमिक समंक

काई–वर्ग (x^2)का गणना मूल्य= 9.94, स्वातंत्रय संख्या (d.f.)= 3, काई–वर्ग (x^2) सारणी मूल्य=7.81

तालिका संख्या 4 द"र्ाती है कि प्रयोज्यों में शामिल 10 क्लर्कों में से 3 क्लर्कों ने, 16 अध्यापकों में से 8 अध्यापकों ने तथा 24 प्राफेसरों में से 20 प्रोफेसरों ने कहा है कि उन्हें कर नियोजन के विषय में जानकारी है तथा इसी प्रकार 10 क्लर्कों में से 7 क्लर्कों ने, 16 अध्यापकों में से 8 अध्यापकों ने तथा 24 प्रोफेसरों में से 4 प्रोफेसरों ने इस सम्बन्ध नहीं कहा है।

काई–वर्ग का गणना मूल्य 9.94 इसके 5% सार्थकता स्तर पर 3 स्वातंत्रय अं"ा के सारणी मूल्य 7.81 से अधिक है। अतः वैकल्पिक परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है अर्थात व्यवसाय आधार तथा कर नियोजन के विषय में सम्बंध सार्थक है अर्थात प्रयोज्यों को कर नियोजन के विषय में जानकारी है।

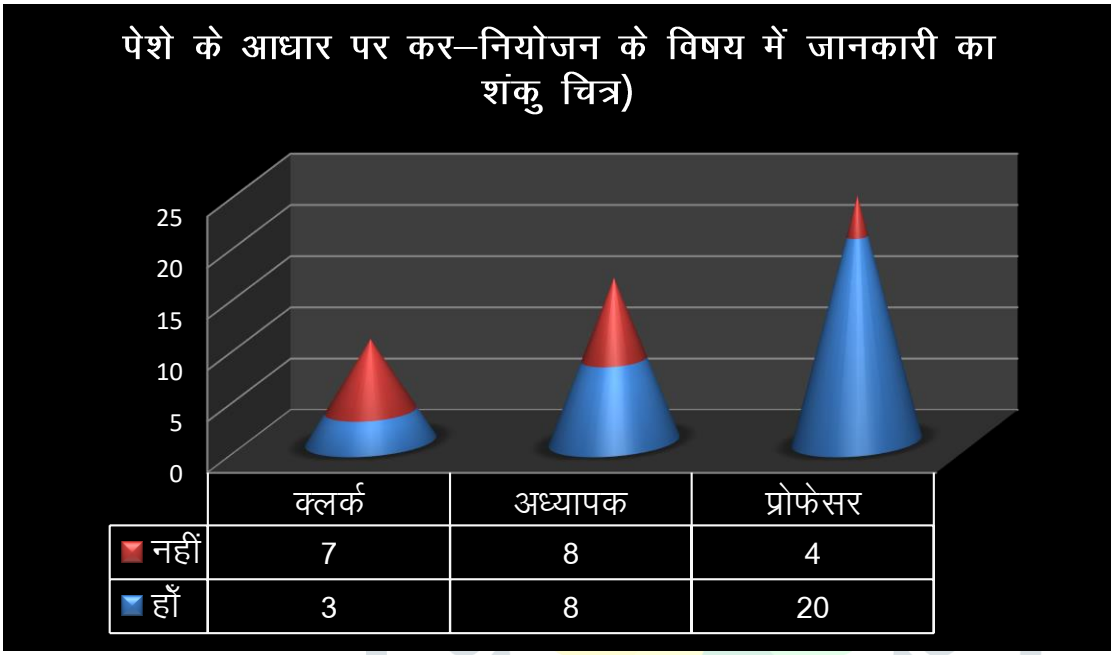

अध्ययन के शोध

(1) पुरूष प्रयोज्यों में से 72.5 प्रति"ात प्रयोज्यों को कर नियोजन के विषय में जानकारी थी अर्थात उन्हें कर–नियोजन कैसे करते हैं इसके विषय में पूर्ण जानकारी थी। तथा 27.5 प्रति"ात पुरूष प्रयोज्यों को कर–नियोजन के विषय में जानकारी नही थी।

(2)केवल 20 प्रति"ात महिला प्रयोज्यों को कर नियोजन के विषय में जानकारी थी। 80 प्रति"ात महिला प्रयोज्यों का कर–नियोजन के विषय में स्तर न के बराबर था।

(3) कर–नियोजन के विषय में जानकारी के सम्बंध में 30 प्रति"ात क्लर्क प्रयोज्यों को जानकारी थी कि कैसे कर–नियोजन करके अपनी आय को बढ़ाया जा सकता है लेकिन 70 प्रति"ात क्लर्क प्रयोज्यों को कर नियोजन के विषय में कोई जानकारी नहीं थी।

(4) 50 प्रति"ात अध्यापक प्रयोज्यों को कर–नियोजन के विषय में जानकारी थी क्योंकि उन्होंने आयकर अधिनियम का अध्ययन किया था। उन्हे धारा 80 की सभी कटौतियों की जानकारी थी लेकिन 50 प्रति"ात अध्यापकों का कर नियोजन के विषय में ज्ञान का स्तर कम था।

(5) कर–नियोजन के विषय में जानकारी के विषय में 83.33 प्रति"ात प्रोफेसरों को जानकारी थी कि कैसे कर–नियोजन करते हैं अर्थात कैसे कर–नियोजन करके अपनी आयों को बढ़ाया जा सकता है परन्तु 16.7 प्रति"ात प्रोफेसर प्रयोज्यों को कर–नियोजन के विषय में ज्ञान नहीं था।

निष्कर्ष

अध्ययन में जो वैकल्पिक परिकल्पना की गयी थी वह सत्य सिद्ध होती है अर्थात सरकारी कर्मचारियों एवं कर–नियोजन के विषय में जानकारी के मध्य सम्बंध सार्थक है क्योंकि लिंग श्रेणी के आधार पर कर–नियोजन के विषय में जानकारी के सम्बंध काई–वर्ग का गणना मूल्य 8.41 इसके 5 सार्थकता स्तर पर, 1 स्वातंत्रय संख्या के सारणी मूल्य 3.841 से अधिक पाया गया। तथा इसी प्रकार पे"ा के आधार पर कर–नियोजन के विषय में जानकारी के सम्बंध काई–वर्ग का गणना मूल्य 9.94 इसके 5 सार्थकता स्तर पर, 3 स्वातंत्रय संख्या के सारणी मूल्य 7.81 से अधिक पाया गया। अतः अध्ययन में शोध उद्दे"य को लेकर जो वैकल्पिक परिकल्पना निर्मित की गयी थी वह सत्य सिद्ध हुई अर्थात सरकारी कर्मचारियों में कर–नियोजन के विषय में जानकारी है एवं वे कर–नियोजन करके अपनी आय को बढ़ाने के साथ–साथ दे"ा के आर्थिक, तीर्व एवं स्वस्थ विकास में अपना गहन योगदान देते हैं।

सुझाव

- कर नियोजन अपनाकर ही स्वयं का एवं देश का आर्थिक एवं स्वस्थ विकास किया जा सकता है। कर–नियोजन ही कर चोरी को रोक सकता है। अतः सरकार को कर–नियोजन के विषय में जागरूकता कार्यक्रमों को सम्पन्न करवाना चाहिंये जिससे की देश के लोग कर–नियोजन अपनाकर अपनी आय को अधिकतम कर सकें तथा कर चोरी को भी रोका जा सके।
- सामान्यतः सरकारी कर्मचारियों को धारा 80C, 80CCC, 80CCD की कटौतियों का ही ज्ञान है। उन्हें 80D, 80D तथा 80DDB का भी अध्ययन करना चाहिंये तथा कटौतियों का लाभ प्राप्त करना चाहिंये।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ. बी. के. अग्रवाल एवं डॉ. राजीव अग्रवाल, *आयकर विधान एवं लेखे*, निरूपम साहित्य सदन, पृष्ठ संख्या 27, 28, 29, 30, 31, 32
- www.sciencegate.app>keyw
- https://www. Researchgate.net>3313....